कथा सरिता

तू भी अपनी कीमत जान

माइकल जब 13 साल का हुआ तो उसके पिता ने उसे एक पुराना कपड़ा देकर उसकी कीमत पूछी। माइकल बोला एक डॉलर, तो पिता ने कहा कि इसे बेचकर दो डॉलर लेकर आओ। माइकल ने उस कपड़े को अच्छे से साफ़ कर धोया और अच्छे से उस कपड़े को फोल्ड लगाकर रख दिया। अगले दिन उसे लेकर वह रेलवे स्टेशन गया, जहां कई घंटों की मेहनत के बाद वह कपड़ा दो डॉलर में बिका। कुछ दिन बाद उसके पिता ने उसे वैसा ही दूसरा कपड़ा दिया और उसे बीस डॉलर में बेचने को कहा। इस बार माइकल ने अपने एक पेंटर दोस्त की मदद से उस कपड़े पर सुन्दर चित्र बना कर रंगवा दिया और एक गुलज़ार बाजार में बेचने के लिए पहुंच गया। एक व्यक्ति ने वह कपड़ा बीस डॉलर में खरीदा और उसे पाँच डॉलर की टिप भी दी। जब माइकल वापस आया तो उसके पिता ने फिर एक कपड़ा हाथ में दे दिया और उसे दो सौ डॉलर में बेचने को कहा। इस बार माइकल को पता था कि इस कपड़े की इतनी ज़्यादा कीमत नहीं मिल सकती। उसके शहर में मूवी की शूटिंग के लिए एक नामी कलाकार आई थीं। माइकल उस कलाकार के पास पहुंचा और उसी कपड़े पर उनके ऑटोग्राफ ले लिए। ऑटोग्राफ लेने के बाद माइकल उसी कपड़े की बोली लगाने लगा। बोली दो सौ डॉलर से शुरू हुई और एक व्यापारी ने वह कपड़ा 1200 डॉलर में ले लिया। रकम लेकर जब माइकल घर पहुंचा तो खुशी से पिता की आँखों में आंसू आ गए। उन्होंने बेटे से पूछा कि इतने दिनों से कपड़े बेचते हुए तुमने क्या सीखा? माइकल बोला - पहले खुद को समझो, खुद को पहचानो। फिर पूरी लगन से मन्ज़िल की ओर बढ़ो, क्योंकि जहाँ चाह होती है, राह अपने आप निकल आती है। पिता बोले कि तुम बिल्कुल सही हो, मगर मेरा ध्येय तुम्हें यह समझाना भी था कि अगर इंसान खुद के बने कपड़े को मैला होने के बाद भी इतनी कीमत बढ़ा सकता है, तो फिर वो परमात्मा अपने द्वारा बनाये हम इंसानों की कीमत बढ़ाने में क्या कोई कसर छोड़ भी सकता है? जीवात्मा भी यहां आकर मैली हो जाती है, लेकिन सतगुरू हम मैले जीवात्माओं को पहले साफ़ और स्वच्छ करते हैं, जिससे परमात्मा की नज़र में हम जीवात्माओं की कीमत थोड़ी बढ़ जाती है। फिर सतगुरू हम जीवात्माओं को अपनी रहनी के रंग में रंग देते हैं, फिर कीमत और ज़्यादा बढ़ जाती है। फिर सतगुरू हम पर अपने नाम की मोहर लगा देते हैं, फिर तो इंसान अपनी कीमत का अंदाज़ा ही नहीं लगा सकता।

लेकिन अफ़सोस! इतना कीमती इंसान अपने आप को कौड़ियों के दाम खर्च करते जा रहा है। उसे अपने आप की ही पहचान नहीं, उसे अपने ऊपर लगी सतगुरू के नाम रूपी कृपा और उस अपार दया की कद्र नहीं, क्योंकि अगर कद्र होती तो उसकी याद में अपना पूरा पूरा समय देकर अपने इंसानी जामे का मकसद और उसकी कीमत भी ज़रूर समझते।

निष्फल कुछ भी नहीं...

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और एक लड़का था। कुछ सालों के बाद पत्नी की मृत्यु हो गई। उस समय लड़के की उम्र दस साल थी। किसान ने दूसरी शादी कर ली। उस दूसरी पत्नी से भी किसान को एक पुत्र प्राप्त हुआ। किसान की दूसरी पत्नी की भी कुछ समय बाद मृत्यु हो गई।

किसान का बड़ा बेटा जो पहली पत्नी से प्राप्त हुआ था, जब शादी के योग्य हुआ तब किसान ने बड़े बेटे की शादी कर दी। फिर किसान की भी कुछ समय बाद मृत्यु हो गई। किसान के दोनों बेटे साथ ही रहते थे। कुछ समय बाद किसान के छोटे लड़के की तबीयत खराब रहने लगी। बड़े भाई ने कुछ आस पास के वैद्यों से उसका इलाज करवाया, पर कोई राहत ना मिली। छोटे भाई की दिन पर दिन तबीयत बिगड़ी जा रही थी और बहुत खर्च भी हो रहा था। एक दिन बड़े भाई ने अपनी पत्नी से सलाह की, यदि ये छोटा भाई मर जाए तो हमें इसके इलाज के लिए पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा। तब उसकी पत्नी ने कहा कि क्यों न किसी वैद्य से बात करके इसे ज़हर दे दिया जाए, किसी को पता भी नहीं चलेगा, रिश्तेदारी में भी कोई शक नहीं करेगा। सब सोचेंगे कि बीमारी से मृत्यु हो गई। बड़े भाई ने ऐसा ही किया। उसने एक वैद्य को कुछ धन देकर छोटे भाई को ज़हर देने की बात की। वैद्य ने बात मान ली और उसे ज़हर दे दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उसके भाई भाभी ने खुशी मनाई कि रास्ते का काँटा निकल गया, अब सारी सम्पत्ति अपनी हो गई। उसका अंतिम संस्कार कर दिया। कुछ महीनों बाद किसान के बड़े लड़के की पत्नी को लड़का हुआ! उन पति पत्नी ने खूब खुशी मनाई, बड़े ही लाड़-प्यार से लड़के की परवरिश की। जब लड़का जवान हो गया, तो उसकी शादी कर दी! शादी के कुछ समय बाद अचानक लड़का बीमार रहने लगा। माँ बाप ने उसका बहुत वैद्यों से इलाज करवाया। जिसने जितना पैसा मांगा उसने दिया ताकि लड़का ठीक हो जाए। अपने लड़के के इलाज में उसने अपनी आधी सम्पत्ति तक बेच दी, पर लड़का बीमारी के कारण मरने की कगार पर आ गया। उसका शरीर इतना ज़्यादा कमज़ोर हो गया कि अस्थि पंजर शेष रह गया था। एक दिन उसका पिता चारपाई पर लेटे अपने लड़के की दयनीय हालत देख कर दु:खी होकर उसकी ओर देख रहा था! तभी लड़का पिता से बोला, भाई! अपना सब हिसाब हो गया। बस अब कफन और लकड़ी का हिसाब बाकी है, उसकी तैयारी कर लो। ये सुनकर उसके पिता ने सोचा कि लड़के का दिमाग भी काम नहीं कर रहा बीमारी के कारण। वो बोला, बेटा मैं तेरा बाप हूँ, भाई नहीं। तब लड़का बोला, मैं आपका वही भाई हूँ जिसे आपने ज़हर देकर मरवाया था। जिस सम्पत्ति के लिए आपने ऐसा किया था, अब वो मेरे इलाज के लिए आधी बिक चुकी है। बस आपकी शेष है। हमारा हिसाब हो गया!

तब उसका पिता फूट-फूट कर रोते हुए बोला, कि मेरा तो कुल नाश हो गया। जो किया मेरे आगे आ गया। पर तेरी पत्नी का क्या दोष है जो इस बिचारी को जिन्दा जलाया जायेगा(उस समय सतीप्रथा थी, जिसमें पति के मरने के बाद पत्नी को पति की चिता के साथ जला दिया जाता था)। तब वो लड़का बोला, वो वैद्य कहाँ है जिसने मुझे ज़हर खिलाया था। तब उसके पिता ने कहा कि आपकी मृत्यु के तीन साल बाद ही वो मर गया था। तब लड़के ने कहा, ये वही दुष्ट वैद्य आज मेरी पत्नी के रूप में है। मेरे मरने पर इसे ज़िन्दा जलाया जायेगा।

परमेश्वर कहते हैं कि तुमने उस दरगाह का महल ना देखा,
धर्मराज लेगा तिल तिल का लेखा।
एक लेवा एक देवा दुतम, कोई किसी का पिता ना पुत्रम,
ऋण सम्बंध जुड़ा है ठाडा, अंत समय सब बारह बाटा ।।

शान्तिवन। ब्रह्माकुमारीज़ बहादुरगढ़ ने महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में बेरों से शिवलिंग बनाया। इसे विश्व कीर्तिमान, 'बंडर बुक ऑफ रिकॉर्ड्स इन्टरनेशनल लंडन' में स्थान मिला है। इसका प्रमाण पत्र राजयोगिनी दादी जानकी को भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजली, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु.गंगाधर, डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके तथा ब्र.कु. संदीप।

भुवनेश्वर-ओडिशा। धर्मेंद्र प्रधान,यूनियन मिनिस्टर,पेट्रोलियम एंड नैचुरल गैस को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.दुर्गेश नंदिनी। साथ हैं ब्र.कु. विजया, ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. हिरोज व अन्य।

आहोर-राज.। 'प्रभु दर्शन भवन' के उद्घाटन अवसर पर केक काटते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी,दिल्ली, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. गीता, प्रफुल्ल कुंवर, पंकज मीना, सोनीलाल, ब्र.कु. महेश,मुम्बई तथा अन्य।

हरमू रोड-राँची। सेवाकेन्द्र की प्रथम संचालिका ब्र.कु. रानी दीदी की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ब्र.कु. निर्मला तथा अंजेला गोएनका।

लंदन। थ्री फेथ फोरम द्वारा विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में 'बीइंग द हैप्पीनेस मैगनेट' प्रोजेक्ट के अंतर्गत ब्र.कु. मौरीन तथा ब्र.कु. दक्षा को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

कटक-ओडिशा। साइंटिस्ट्स व इंजीनियर्स के लिए आयोजित 'नेशनल सेमिनार' का उद्घाटन करते हुए बायें से ब्र.कु. फकीर मोहन दास, डॉ हिमांशु पाठक,डायरेक्टर,एन.आर.आर.आई., प्रो.ई.वी. स्वामीनाथन, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु.कमलेश दीदी, ब्र.कु. सुलोचना, डॉ.गोपाल चन्द्र मित्रा,पूर्व सेक्रेट्री,वर्क्स डिपार्टमेंट, ब्र.कु.भारत भूषण, ब्र.कु.नरेन्द्र पटेल, ए.के.पण्डा व अन्य।